Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

"शिवालिक क्षेत्र के एतिहासिक स्थल: बिलासपुर, सढौरा और लोहगढ़ का एक एतिहासिक अध्ययन"

{डॉ. रमेश कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास,
राजकीय महाविद्यालय अहड़वाला (बिलासपुर)}

शोध सारांश: हरियाणा क्षेत्रफल और जनसंख्या की दृष्टि से भारत का काफी छोटा हिस्सा है। लेकिन भारत के इतिहास में इसका महत्वपूर्ण स्थान रहा है। हरियाणा भारतीय संस्कृति का पालना रहा है। वेदों की रचना और गीता का उपदेश यहीं दिया गया। अर्जुन और कर्ण जैसे वीर योद्धाओं के धनुषों की टंकार यहीं गूंजी। हर्षवर्धन जैसे दानी शासक, बाणभट्ट और सूरदास जैसे महाकवि, हसन खान मेवाती और मोहन सिंह मंडार जैसे वीर योद्धा भी यहीं हुए। हरियाणा ने शक, कुषाण, हूण, तुर्क, मुगल और फिरंगीयों की तलवारों के गहरे घाव सहकर भी अपने धर्म, सभ्यता, संस्कृति और सम्मान को बचाए रखा। उत्तर हरियाणा में शिवालिक का क्षेत्र पड़ता है। यह क्षेत्र एतिहासिक दृष्टि से काफी समृद्ध है। यहाँ बिलासपुर, कपाल मोचन, छाछरौली, सढौरा और लोहगढ़ के एतिहासिक स्थल है। बिलासपुर और उसके पास ही सुरसती नदी के किनारे पर कपाल मोचन (सोमसर) का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है जिसका विवरण पुराणों में मिलता है। इसी प्रकार सढौरा और लोहगढ़ दोनों स्थानों का संबंध वीर योद्धा बंदा सिंह बहादुर से रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में शिवालिक क्षेत्र के इन प्रमुख एतिहासिक स्थलों का अध्ययन किया जा रहा है।

कूट शब्दः हरियाणा, भारतीय संस्कृति, वेद, गीता, धर्म, सभ्यता, संस्कृति, शिवालिक, बिलासपुर, छाछरौली, कपाल मोचन, सढौरा, लोहगढ़, सुरसती नदी, सोमसर, तीर्थ स्थल, बंदा सिंह बहादुर।

हरियाणा क्षेत्रफल और जनसंख्या की दृष्टि से भारत का काफी छोटा हिस्सा है। लेकिन भारत के इतिहास में इसका महत्वपूर्ण स्थान रहा है। हरियाणा भारतीय संस्कृति का पालना रहा है। वेदों की रचना और गीता का उपदेश यहीं दिया गया। अर्जुन और कर्ण जैसे वीर योद्धाओं के धनुषों की टंकार यहीं गूंजी। हर्षवर्धन जैसे दानी शासक, बाणभट्ट और सूरदास जैसे महाकवि, हसन खान मेवाती और मोहन सिंह मंडार जैसे वीर योद्धा भी यहीं हुए। हरियाणा ने शक, कुषाण, हूण, तुर्क, मुगल और फिरंगीयों की तलवारों के गहरे घाव सहकर भी अपने धर्म, सभ्यता, संस्कृति और सम्मान को बचाए रखा। उत्तर हरियाणा में शिवालिक का क्षेत्र पड़ता है। यह क्षेत्र एतिहासिक दृष्टि से काफी समृद्ध है। यहाँ बिलासपुर, कपाल मोचन, छाछरौली, सढौरा और लोहगढ़ के एतिहासिक स्थल है। बिलासपुर और उसके पास ही सुरसती नदी के किनारे पर कपाल मोचन (सोमसर) का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है जिसका विवरण पुराणों में मिलता है। इसी प्रकार सढौरा और लोहगढ़ दोनों स्थानों का संबंध वीर योद्धा बंदा सिंह बहादुर से रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में शिवालिक क्षेत्र के इन प्रमुख एतिहासिक स्थलों का अध्ययन किया जा रहा है।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

कनिंघम (Archeological Survey of India Report Volume II) और रॉजर (Report of Punjab Circle of the Archeological Survey of India for 1888-89) ने सबसे पहले इस क्षेत्र का पुरातात्विक सर्वेक्षण किया था। मनमोहन कुमार (अंबाला और कुरुक्षेत्र जिलों के पुरातत्व, हरियाणा, 1978) और ब्रह्मदत्त (चित्रित ग्रे बर्तनों का निपटान, हरियाणा, 1981) ने शोध कार्य करके कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से पीएचडी डिग्री प्राप्त की। राजिंदर कुमार ने जगाधरी तहसील का नया सर्वेक्षण किया और विभिन्न स्थानों से पुरातात्विक सामग्री एकत्र की। उन्होंने जगाधरी के प्राचीन इतिहास और पुरातत्व को पूरा करने के लिए अपने शोध प्रबंध में एम.फिल की डिग्री 1987 में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से प्राप्त की। उसी वर्ष कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से एक और शोधार्थी योगेश्वर कुमार ने नारायणगढ़ क्षेत्र के पुरातत्व पर एम.फिल किया। उत्तर हड़प्पा के बर्तनों से उत्तर मध्यकालीन पुरावशेषों तक, इस क्षेत्र में प्राप्त पुरातात्विक खोजें विविध और महत्वपूर्ण हैं। शिवालिक क्षेत्र यमुना नदी के दक्षिण-पश्चिमी तट पर हिमाचल प्रदेश और उत्तर प्रदेश की सीमाओं को छूता है। यह क्षेत्र पुरातात्विक एवं एतिहासिक रूप से बहुत समृद्ध है। यमुना, सरस्वती, चौतांग, राखी, सोम, बोली और अन्य महत्वपूर्ण नदियां इसी शिवालिक क्षेत्र से निकलती हुई मैदान में प्रवेश करती हैं। हिमालय की बर्फ़ीली चोटियों के मध्य से शिवालिक पहाड़ियों से गुजरती हुई यमुना नदी मैदान में प्रवेश करती है। इसी तरह शिवालिक पहाड़ियों से गुजरते हुए सरस्वती नदी आदिबद्री नामक स्थान पर मैदान में आती है। इस शिवालिक क्षेत्र में व्यासपुर, सदौरा, लोहगढ़, कलेसर, छछरौली इत्यादि महत्वपूर्ण एतिहासिक स्थल हैं:

बिलासपुर (व्यासपुर): कहा जाता है कि यह स्थान महाभारत के संकलनकर्ता ऋषि वेद व्यास से जुड़ा है। परंपरा के अनुसार, यहीं पर वेद व्यास का आश्रम स्थित था। महान ऋषि के नाम पर इसका नाम व्यासपुर रखा गया था, लेकिन बाद में इसका नाम बदलकर बिलासपुर हो गया। बिलासपुर के आसपास कई महत्वपूर्ण धार्मिक, आध्यात्मिक एवं प्राचीन एतिहासिक स्थल हैं:

व्यास कुंड: महाभारत के संकलनकर्ता ऋषि वेद व्यास का तालाब बिलासपुर के दक्षिण में स्थित है। ऐसा कहा जाता है कि यहीं पर वेद व्यास का आश्रम था। यह भी माना जाता है कि महाभारत के युद्ध के अंतिम चरण में दुर्योधन ने इसी कुंड में खुद को छुपाया था।

इस स्थान की प्राचीनता कई पुरातात्विक खोजों से स्थापित होती है। इनमें तीसरी शताब्दी ईस्वी के इंडो-सासैनियन सिक्के, 9वीं-10वीं शताब्दी ईस्वी की उमा महेश्वर की एक प्रतिमा, 11वीं-12वीं शताब्दी ईस्वी की गणेश की एक और प्रतिमा, और व्यासपुर से लगभग 2.5 किलोमीटर उत्तर में स्थित कपाल मोचन स्थल से गुप्त लिपि में प्राप्त दो खंडित शिलालेख शामिल हैं। बिलासपुर और उसके आसपास कई तीर्थ हैं,

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

इनमें से सबसे प्रसिद्ध कपाल मोचन है जहां कार्तिक (अक्टूबर-नवंबर) में एकादशी से पूर्णिमा तक पांच दिनों के लिए एक बड़ा मेला आयोजित किया जाता है जिसमें उत्तर भारत के विभिन्न हिस्सों से हिंदू और सिख धार्मिक समूहों से संबंधित लाखों लोग हर साल भाग लेते हैं। कपाल मोचन सरोवर की पौराणिक कथा महाभारत और अन्य पुराणों में वर्णित है। स्कंद पुराण के अनुसार ब्रह्मा ने यज्ञ के प्रदर्शन के लिए तीन अग्नि कुंड बनाए थे। उत्तर में स्थित अग्नि कुंड प्लक्ष तीर्थ के रूप में जाना जाता है जो लोकप्रिय रूप से पुलस्त्य ऋषि के नाम से जुड़ा है, जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने यहां लंबे समय तक ध्यान किया था। यह कपाल मोचन से लगभग 6 किलोमीटर उत्तर में रामपुर के पास स्थित है। मूल रूप से दक्षिण में आधे चंद्रमा के आकार का अग्नि कुंड पहले सोमसर तीर्थ बन गया ऐसा कहा जाता है कि शिव कुछ समय के लिए कपाल मोचन में रुके थे और उत्तर की ओर थोड़ी दूरी पर स्वयं सिद्धेश्वर नामक एक शिव लिंग की स्थापना की थी, जो अब कपाल मोचन से 2 किलोमीटर की दूरी पर संधाय गांव के पास स्थित है। स्कंद पुराण के अनुसार जो लोग कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष में कपाल मोचन तालाब में स्नान करते हैं और शिव के लिंग के दर्शन करते हैं, उन्हें शाश्वत आनंद की प्राप्ति होती है।

कपाल मोचन सरोवर: यह मुख्य पवित्र तालाब है, इसे सोमसर तीर्थ के नाम से जाना जाता था और शिव ने इसका नाम बदलकर कपाल मोचन कर दिया था क्योंकि इस तालाब में स्नान करने से शिव के हाथ से खोपड़ी (कपाल) का निशान मिट गया था, जो ब्रह्मा का सिर काटते समय प्रकट हुआ था। इसके पश्चिमी घाट को राम आश्रम घाट कहा जाता है। काली गाय और काले बछड़े की मूर्तियाँ पूर्वी तट पर और सफेद गाय और सफेद बछड़े की मूर्तियाँ पश्चिमी तट पर स्थित हैं। ऐसा कहा जाता है कि एक गाय और बछड़ा ब्रह्महत्या के परिणामस्वरूप काले हो गए थे, उन्होंने कपाल मोचन सरोवर में प्रवेश किया और पूंछ और नाक को पानी से ऊपर उठाकर स्नान किया। उनके शरीर का मूल सफेद रंग वापस आ गया, लेकिन नाक और पूंछ काली ही रहीं। कपाल मोचन सरोवर के किनारे गुरु गोबिंद सिंह को समर्पित एक गुरुद्वारा है, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह पहाड़ी राजाओं के साथ युद्ध के बाद 52 दिनों तक यहाँ रुके थे। ऐसा भी कहा जाता है कि उन्होंने युद्ध में इस्तेमाल किए गए हथियारों को ऋण मोचन सरोवर में साफ किया था और सरोवर पर इस स्थान को 'शस्त्र-घाट गुरु गोबिंद सिंह जी' कहा जाता है।

ऋण मोचन सरोवर: कपाल मोचन सरोवर के दक्षिण-पूर्व में स्थित, यह ब्रह्मा द्वारा निर्मित तीसरा अग्निकुंड (अग्र कुंड) था। ऐसा कहा जाता है कि महाभारत के युद्ध के बाद, पांडवों ने, जिन्होंने अपने कई सगे-संबंधियों और अपने गुरु द्रोणाचार्य का वध किया था, इस स्थान पर यज्ञ किया था और महाकाव्य युद्ध के दौरान किए गए पापों से मुक्ति पाने के लिए इस तालाब में स्नान किया था। इस तालाब के चारों ओर पक्के घाट हैं। सरोवर के पश्चिमी भाग में पांडवों की मूर्तियों वाला एक मंदिर स्थित है।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

सूरज कुंड: यह कपाल मोचन के लिए एक और पवित्र सरोवर है। एक स्वामी की समाधि, जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने यह तालाब खुदवाया था, इस तालाब के पास स्थित है। पारंपरिक रूप से इस पवित्र स्थान को निःसंतान महिलाओं को संतान प्राप्ति का वरदान देने वाला माना जाता है।

चंदा खेड़ी: चंदा खेड़ी स्थल जगाधरी-बिलासपुर रोड पर बिलासपुर से 2 किमी दक्षिण में स्थित है। यह स्थल सरस्वती नदी के बाएं किनारे पर स्थित है और यहां से सादे भूरे और उत्तरी तिब्बती चीनी मिट्टी के बर्तनों के साथ-साथ अन्य प्रारंभिक ऐतिहासिक लाल बर्तनों के अवशेष मिले हैं।

पंचमुखी हनुमान मंदिर: बिलासपुर-छछरौली रोड पर बिलासपुर से लगभग 4 किलोमीटर दूर स्थित, यह मंदिर बस्तियाँवाला गाँव की भूमि पर स्थित है। इस मंदिर में भगवान हनुमान की पाँच अलग-अलग छवियों वाली एक मूर्ति है, कहा जाता है कि यह भारत में अपनी तरह के तीन मंदिरों में से एक है। यह बहुत पूजनीय है और हर मंगलवार और शनिवार को बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहाँ आते हैं।

छछरौली: यह बिलासपुर से लगभग 8 किलोमीटर पूर्व में स्थित है। यह शहर कलसिया की पूर्ववर्ती रियासत की राजधानी था, जिसकी स्थापना 1763 में गुरबख्श सिंह ने की थी। शहर की प्रमुख इमारतें रवि महल, घंटाघर, किला और जनक निवास हैं।

मीरपुर: मीरपुर, छछरौली से 4 किलोमीटर दक्षिण और बढ़ेरी गाँव से 3 किलोमीटर पूर्व में स्थित है। यह स्थल गाँव से उत्तर-पूर्व दिशा में लगभग 300 मीटर दूर है और पूरी तरह से खेती योग्य है। इस स्थल का अनुमानित आकार 250×200×1 मीटर है और इसमें उत्तर हड़प्पा काल के मिट्टी के बर्तन, टेराकोटा के मनके और गेंदें मिली हैं।

बनसंतूर: छछरौली के उत्तर पूर्व में स्थित है और कहा जाता है कि इसका संबंध महाभारत के राजा शांतनु से है। यहाँ एक पवित्र कुआँ है जिसका जल गंगा के समान पवित्र और पूजनीय माना जाता है। इस स्थान से चित्रित धूसर बर्तन भी मिले हैं।

ताजेवाला-हथिनी कुंड और कलेसर परिसर: जगाधरी-पावंटा राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक-दूसरे से 5 किलोमीटर के दायरे में स्थित अत्यंत मनोरम स्थानों पर फैला यह परिसर पर्यटकों के लिए प्राकृतिक आकर्षण का केंद्र है। ताजेवाला हेड वर्क्स इस परिसर में एक बहुत ही लोकप्रिय पर्यटन स्थल है, जो अंबाला से 92 किलोमीटर और जगाधरी से -40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहीं से यमुना नदी से पश्चिमी यमुना नहर और पूर्वी यमुना नहर निकलती है। यह स्थान मछली पकड़ने के लिए आदर्श है। ताजेवाला के विश्राम गृह में लगभग 100 साल पुरानी मछुआरों की एक अभिलेख पुस्तिका संरक्षित है।

ताजेवाला से लगभग 5 किलोमीटर दूर हथिनी कुंड, मछुआरों के लिए स्वर्ग है। नदी में महासीर मछलियाँ बहुतायत में हैं और यमुना के पानी का मनोरम दृश्य दिखाई देता है, जहाँ से प्रकाश और छाया के बदलते

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

स्वरूप दिखाई देते हैं। यहाँ मछली पकड़ने के लिए परमिट सिंचाई विभाग, सहायक कार्यकारी अधिकारी कार्यालय से उपलब्ध हैं।

कलेसर अंबाला से 95 किलोमीटर और जगाधरी से 38 किलोमीटर दूर स्थित है। यह एकांत का एक अद्भुत नज़ारा प्रस्तुत करता है। मनमोहक परिवेश में बसा कलेसर खेल अभयारण्य 5,098 हेक्टेयर क्षेत्र में फैले घने साल के पेड़ों से घिरा है। यह शानदार जंगल क्षेत्र बेजोड़ सुंदरता के स्थलों से भरा है। हरे पत्ते, असंख्य फूल, सजावटी पेड़ और सुंदर झाड़ियाँ अलौकिक सौंदर्य का नज़ारा प्रस्तुत करते हैं। नाचते हुए मोर एक मनोरम दृश्य प्रस्तुत करते हैं। परिसर में आने वाले पर्यटकों के लिए कलेसर वन विश्राम गृह, हथिनी कुंड विश्राम गृह और ताजेवाला विश्राम गृह में उपयुक्त आवास उपलब्ध हैं।

सढौरा: सढौरा कस्बे का नाम इसके मूल नाम साधु राह का बिगड़ा हुआ रूप बताया जाता है। यह पवित्र गंगा की ओर जाते समय साधुओं का एक पड़ाव स्थल था। कस्बे में और इसके आसपास पुराने मंदिरों और तालाबों का होना इस परंपरा का समर्थन करता है कि यह तीर्थयात्रियों के लिए एक प्राचीन पड़ाव स्थल था। यह नारायणगढ़ से यमुनानगर की ओर लगभग 25 किलोमीटर और बिलासपुर से 10 किलोमीटर दूर स्थित है। 19वीं शताब्दी के पंजाब में सढौरा आर्थिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में एक प्रमुख स्थान रखता था क्योंकि यह मैदानी इलाकों का मुख्य केंद्र था जहाँ से पहाड़ी लोग भारत के मैदानी इलाकों से अपना सामान प्राप्त करते थे या अपने अतिरिक्त सामान मैदानी इलाकों में भेजते थे। कस्बे का महत्व इस बात से लगाया जा सकता है कि लाहौर के बाद यह पहला और एकमात्र स्थान था जहाँ लेथ प्रिंटिंग प्रेस और नगरपालिका भी थी। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि रेलवे के आगमन के बाद व्यापारी वर्ग यहाँ से अंबाला या जगाधरी की ओर पलायन करने लगा और इस प्रकार जनसंख्या और उससे जुड़ी आर्थिक गतिविधियाँ, जिनमें व्यापार और वाणिज्य शामिल हैं, कम हो गईं, जिससे एक प्रमुख ऐतिहासिक स्थान का दयनीय पतन हुआ। यह शहर एक बहुत पुराना निवास स्थान है जिसका प्रमाण वर्तमान शहर में और उसके आसपास पुरातात्विक खोजों और पुरानी स्मारकीय इमारतों से मिलता है। यह शहर प्रसिद्ध शेख चेहली (चिल्ली) का जन्मस्थान माना जाता है, जिनके बारे में कई मनोरंजक किस्से प्रचलित हैं। आधुनिक शहर के भीतरी इलाकों में कई मध्ययुगीन काल की स्मारकीय इमारतें हैं जो उस समय के राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में इसके महत्व को दर्शाती हैं। एक स्थानीय परंपरा के अनुसार, सदाना कसाई (सदाना, कसाई) नामक एक संत का जन्म यहीं हुआ था। उनकी शिक्षाओं वाले कई छंदों को सिख पवित्र ग्रंथ (गुरु ग्रंथ साहिब) में स्थान मिला है।

संगनी मस्जिद: संगनी मस्जिद, जिसे पथरिया मस्जिद (पत्थरों से बनी मस्जिद) या भूरे पत्थरों से बनी जिनोंवाली मस्जिद के नाम से भी जाना जाता है, शहर के पश्चिमी भाग में स्थित है। अलेक्जेंडर कनिंघम

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ने इसके निर्माण का संबंध अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.) के समय से जोड़ा है। शहर में एक और मध्ययुगीन मस्जिद है जिसे काजी की मस्जिद के नाम से जाना जाता है।

संगनी मस्जिद के दक्षिण-पूर्व में और थोड़ी दूरी पर, मस्जिद और अब्दुल वहाब का मकबरा है। इस अनोखी मस्जिद में तीन गुंबद और अजीबोगरीब आकार के द्वार हैं। प्रत्येक द्वार के ऊपर एक शिलालेख था, जिसके मध्य द्वार पर कथित तौर पर 1080 की तिथि और महिउद्दीन आलमगीर शाह का नाम अंकित है, लेकिन वह शिलालेख अब गायब हो गया है। शहर के उत्तर में, नकटी नदी के किनारे, 1450 ई. में निर्मित हज़रत शाह कुमेश का मकबरा और 1600 ई. की एक मस्जिद है। यहाँ हर साल एक बड़ा मेला लगता है जिसमें भारत के विभिन्न हिस्सों के साथ-साथ कुछ विदेशी लोग भी शामिल होते हैं। ऐसा माना जाता है कि यह मेला अकबर के संरक्षक और प्रधानमंत्री बैरम खान के आदेश पर शुरू हुआ था।

बुद्धू शाह गुरुद्वारा: शहर के मध्य में पीर बुद्धू शाह का गुरुद्वारा है, जो एक मुस्लिम संत थे और जिनका जन्म 13 जुलाई, 1647 को सढौरा में हुआ था। उनका मूल नाम सैयद बदरुद्दीन था। उन्होंने मुगल और पहाड़ी राजा की सहयोगी सेनाओं के खिलाफ भगानी के युद्ध में गुरु गोबिंद सिंह की सहायता की थी। इस युद्ध में उनके चारों पुत्र शहीद हो गए। बाद में, 21 मार्च, 1704 को उन्हें भी सम्राट औरंगजेब के आदेश पर भेजी गई मुगल सेना ने पकड़ लिया और मार डाला। यह सेना उन्हें दसवें सिख गुरु के आदेश पर शाही सेना का विरोध करने के उनके दुस्साहस के लिए दंडित करने हेतु भेजी गई थी। उनकी शहादत को बंदा बहादुर ने स्मरण किया, जिन्होंने 1712 में यहां मुगल सेना को हराया और गुरुद्वारा पीर बुधु शाह का निर्माण किया। इस प्रकार ऐतिहासिक इमारत अस्तित्व में आई। जिस स्थान पर यह युद्ध हुआ था उसे कतल गढ़ी के नाम से जाना जाता है, अर्थात वह किला जहाँ हत्याएँ हुई थीं।

यहाँ गग्गरवाला के नाम से एक मंदिर है, जो लोकप्रिय रूप से इसके संस्थापक ऋषि गग्गर गर्ग के नाम से जुड़ा हुआ है, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे यहाँ मध्यस्थता करते थे। सढौरा में कुछ महत्व का एक अन्य ऐतिहासिक मंदिर तोरणवाला मंदिर के रूप में जाना जाता है।

यह स्थल नकटी या सढौरा वाली नदी के किनारे शहर के उत्तर में है और इसका नाम पक्का किला है। 1987 में इस स्थल का अनुमानित आकार लगभग 500×250×8 मीटर था, लेकिन नदी के पानी के तेजी से कटाव के कारण यह क्षतिग्रस्त हो गया है। अन्वेषण के दौरान इस स्थल से धूसर मृदभांड के साथ-साथ चमकदार मृदभांड के टुकड़े एकत्र किए गए थे। इससे पहले अलेक्जेंडर कनिंघम ने 1878-79 के दौरान शहर की खोज की थी और वहां से 61 हिंदू सिक्के और 53 मुस्लिम सिक्के एकत्र किए थे। अगले खोजकर्ता, सी. जे. रॉजर्स ने 1888-89 में शहर की अपनी यात्रा के दौरान बताया था कि उन्होंने मेनांडर के कुछ सिक्कों के अलावा बड़ी संख्या में इंडो-सासैनियन सिक्के, ढलवां सिक्के, कुणिंदा सिक्के आदि एकत्र किए थे।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

बाना बहादुरपुर: यह गाँव साढौरा-काला अंब रोड पर साढौरा से काला अंब की ओर 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। 300x200x4 मीटर का यह पुरातात्विक स्थल गाँव के उत्तर में लगभग 500 मीटर की दूरी पर गाँव की आम ज़मीन पर स्थित है, जहाँ खेती होती है। इस स्थल के पूर्व में 37x25x9 सेमी और 25x15x6 सेमी माप की ईंटों की एक संरचना है। इस स्थल से ऐतिहासिक लाल बर्तनों के साथ-साथ कुषाण ईंटें भी प्रचुर मात्रा में मिली हैं और जहाँ तक सिक्कों का सवाल है, यह बहुत समृद्ध है। 1987 में इस स्थल की खोज के दौरान योगेश्वर कुमार ने अच्छी संख्या में कनिष्क और हुविस्का के सिक्के एकत्र किए थे। सढौरा की लड़ाई से पूर्व बंदा सिंह बहादुर की सेनाओं ने अपना शिविर इसी स्थान पर लगाया था इसीलिए इस स्थान का नाम बाना बहादुरपुर पड़ा।

झण्डा: काला अंब-सढौरा रोड पर सढौरा से काला अंब की ओर 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह एक छोटा सा गाँव है जिसके उत्तर में एक शिवालिक की पहाड़ी की चोटी पर भगवान शिव को समर्पित एक पुराना मंदिर है। कुछ लोग इस स्थान को प्रसिद्ध महाकाव्य चरित्र बाबरुवाहन से भी जोड़ते है। इस क्षेत्र में प्राचीन आवास के कुछ अवशेष बिखरे हुए हैं। प्राचीन पुरातात्विक स्थल गाँव से लगभग 100 मीटर पूर्व दिशा में स्थित है। श्री योगेश्वर कुमार ने 1987 में इस स्थल से सामंतदेव से संबंधित एक कुणिंदा और तीन कनस्तर एकत्र किए थे। झण्डा गाँव के पास ही सतकुंभा नामक धार्मिक स्थल भी है।

लोहगढ़: लोहगढ़ सिख साम्राज्य की पहली राजधानी थी। इतिहासकार डॉ जे एस ग्रेवाल ने अपनी पुस्तक "द सिख्स ऑफ द पंजाब" (पृष्ठ 83) में लिखा है कि बंदा सिंह बहादुर ने मुखलिसपुर को अपनी राजधानी बनाया, जो एक शाही किला था जिसे बाद में लोहगढ़ नाम दिया गया और गुरु नानक एवं गुरु गोबिंद सिंह के नाम पर एक नया सिक्का चलाया। एक अन्य इतिहासकार डॉ हरि राम गुप्ता ने अपनी पुस्तक "History of The Sikhs Vol. II Evolution of Sikh Confederacies (1708-69)," में लिखा है, कि बंदा बहादुर ने फरवरी 1710 की शुरुआत में अपना मुख्यालय मुखलिसपुर में स्थापित किया, जो नाहन के दक्षिण में निचली शिवालिक पहाड़ियों में, सढौरा से लगभग 20 किमी दूर स्थित था। इसका किला एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित था। इस किले की मरम्मत की गई और इसे सुरक्षा की स्थिति में रखा गया। इन अभियानों में प्राप्त सभी धन, सोना और महंगी सामग्री यहाँ जमा की गई थी। उसने सिक्के बनाए और अपनी मुहर के तहत आदेश जारी किए। मुखलिसपुर का नाम बदलकर लोहगढ़ कर दिया गया और यह पहले सिख राज्य की राजधानी बन गया। पंजाब के गुरदासपुर के गुरदास नंगल गांव में मुगल सेना द्वारा पकड़े गए बंदा सिंह बहादुर को लोहे के पिंजरे में डाल दिया गया और बाकी सिखों को जंजीरों से बांध दिया गया। सिखों को सिख कैदियों के साथ जुलूस के रूप में दिल्ली लाया गया। उन्हें तीन महीने तक कैद में रखा

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

गया, उनकी आंखें फोड़ दी गईं, अंग काट दिए गए, त्वचा निकाल दी गई और फिर 9 जून 1716 को वे शहीद हो गए।

संदर्भ:

1. **महाभारत**
2. **भागवत पुराण**
3. **स्कन्द पुराण**
4. Cunningham, Archeological Survey of India Report Volume II
5. Rodger, Report of Punjab Circle of the Archeological Survey of India for 1888-89
6. Kumar, Manmohan, Archeology of Ambala and Kurukshetra Districts (Haryana), 1978, Unpublished PhD. Thesis, KUK
7. Brahamdutt, Settlement of Painted Grey Wares in Haryana, 1981, Unpublished PhD. Thesis, KUK
8. Kumar Rajinder, Ancient History and Archeology of Jagadhri, M. Phil Dissertation, 1987, KUK
9. Kumar, Yogeshwar, Archeology of Naraingarh Region, M. Phil Dissertation, 1987, KUK
10. Grewal, J. S., The New Cambridge History of India II, The Sikhs of the Punjab, Revised Edition, Cambridge University Press, UK, 1990.
11. Gupta, Hari Ram, History of The Sikhs Vol. II Evolution of Sikh Confederacies (1708-69), Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd., New Delhi, 2007